आम जनता तक पहुंचानी होंगी स्वास्थ्य सुविधाएं

◆ गृहों में बच्चों की पिटाई करने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई

वाराणसी : स्वास्थ्य सुविधाएं लेकर जरूरत मंदों तक पहुंचना होगा। जिन स्थानों पर कुपोषित बच्चे हैं वहां उनको चिन्हित कर उस क्षेत्र के आंगनबाड़ी केंद्र या स्कूल के पास 15 दिन तक मोबाइल वैन, विशेष एंबुलेंस या फिर ऐसी बसें लगाई जाएं जिनमें बेड, चिकित्सक, दवाएं, नर्स आदि से लैस शिविर लगाने का सुझाव शुक्रवार को राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग नई दिल्ली की सदस्य रूपा कपूर ने विकास भवन में दिया। इस पर जिलाधिकारी राजमणि यादव ने अपनी स्वीकृति दी।

विकास भवन में बैठक करतीं राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग की सदस्य रूपा कपूर।

रूपा कपूर ने कहा किसी भी गृह में बच्चों से भोजन, बर्तन की सफाई नहीं करवाई जा सकती। जिन बच्चों के घर का पता मालूम हो उनके माता पिता तक तत्काल उन्हें पहुंचाया जाए। बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, उनके साथ मारपीट की सूचना मिलने पर संबंधित कर्मचारी पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी से कहा कि जितने भी एनजीओ बच्चों के अधिकार, कानून पर कार्य कर रहे हैं वह एक प्लेटफार्म पर आकर काम करें। बैठक में संस्था के लोगों ने कहा पाक्सो एक्ट के तहत 24 घंटे के भीतर लड़कियों का मेडिकल नहीं हो पाता। इस पर उन्होंने जिलाधिकारी को अवगत कराने को कहा। कहा, अगर यहां जिला प्रशासन ध्यान नहीं देता तो आयोग से संपर्क करें। लोगों ने बताया कई सरकारी स्कूल ऐसे हैं जहां दिव्यांग बच्चों के लिए रैंप तक नहीं है एवं कुछ मामले में कम आरक्षण मिलने की बात सामने आई। इस पर रूपा कपूर ने स्कूलों की सूची व उन फार्मों को उपलब्ध कराने को कहा। साथ ही रामनगर गृह में स्टाफ, स्पेशल यूनिट, स्वच्छता, हर कमरे में सीसीटीवी कैमरे, चिकित्सक आदि के लिए कहा। डा. अमरेंद्र पौत्स्यायन, निरुपमा सिंह, श्रुति नागवंशी, अजीत सिंह, सीएमओ डा. वीबी सिंह, प्रभात कुमार आदि थे।

धर्म गुरुओं को जोड़ा जाए

रूपा कपूर ने लोहता आंगनबाड़ी केंद्र का शुक्रवार को निरीक्षण किया। यहां आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से ग्रेड निकालने के तरीके पूछे जिसे वे बता नहीं पाईं। इस पर आयोग सदस्य ने नाराजगी जताई। यहां कई गर्भवती महिलाओं के पास मदर चाइल्ड कार्ड नहीं थे और जिनके पास थे उन्हें इसके बारे में कोई जानकारी भी नहीं थी। इस दौरान टीम ने पोषाहार से बनने वाले अन्य व्यंजन, पंजीकरण रजिस्टर, मिड डे मील आदि की पड़ताल की। बताया आंगनबाड़ी में जागरुकता की कमी थी। उन्हें कम्युनिटी बेस्ड सपोर्ट जरूरी है। मदर्स मीटिंग के साथ फादर्स मीटिंग भी हो। हर धर्म के धर्मगुरुओं को इससे जोड़ा जाए।